Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes For- M.A. Sem-I, CC-3, Unit-III

Topic- पल्लवों का राजनीतिक इतिहास (Political History of the Pallavas.)

राजनीतिक इतिहास— सिंह विष्णु (575-600 ई०) के सिंहासन पर बैठते ही पल्लव इतिहास का नया अध्याय प्रारंभ हुआ, क्योंकि उसकी जीतों का सम्पूर्ण तमिल प्रदेश पर प्रभाव पड़ा। उसने चोलों, कलभ्रों, मालव, पांड्य तथा चेरों को पराजित किया। उसके राज्य की सीमा कावेरी नदी तक थी।

महेन्द्रवर्मन (600-630 ई०) के काल में पल्लवों के चालुक्यों तथा पांड्यों से युद्ध शुरु हो गए, जो लगभग-150 वर्षों तक जारी रहे। यह सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व था। इसने मत्तविलास, विचित्रचित्र तथा गुणभार आदि उपाधियां धारण की। चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने जब कांची पर आक्रमण किया, तो महेन्द्रवर्मन ने उसे बुरी तरह पराजित किया। महेन्द्रवर्मन प्रारंभ में जैन मतानुयायी था, किंतु शैव संत अप्पार के प्रभाव से शैवधर्म ग्रहण कर लिया। इसने मत्तविलास प्रहसन' नामक ग्रंथ की रचना की। इसने कपालिकों ने संगीताचार्य रुद्राचार्य से संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी।

नरसिंह वर्मन (630-668 ई०) अपने पिता महेन्द्रवर्मन की मृत्यु के बाद शासक बना। उसने चालुक्यों की राजधानी बादामी को जीता तथा 'महामल्ल' की उपाधि धारण की। उसी के साथ युद्ध करते हुए चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय मारा गया तथा इसने वातापीकोंड की उपाधि धारण की थी।

कुरम दानपत्र के अनुसार, उसने चोल, पाण्ड्य, तथा

→ केरल राजाओं को पराजित किया। नरसिंह वर्मन ने महाबलिपुरम् में एकाश्मक रथ मंदिर का निर्माण करवाया था। 'महाबलिपुरम् उसके राज्य का प्रमुख बंदरगाह था।

चीनी यात्री ह्वेनसांग इसी के शासन काल में कांची की यात्रा पर आया था। नरसिंह वर्मन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रवर्मन (668-670 ई०) राजा बना, जिसने नरेश विक्रमादित्य को पराजित किया, किंतु वह शीघ्र ही मारा गया। महेन्द्रवर्मन-II के पश्चात् परमेश्वर-I (670-680 ई०) शासक बना। उसके काल में पल्लवों तथा चालुक्यों में भयंकर युद्ध हुए। पल्लवों ने चालुक्य नरेश विक्रमादित्य को बुरी तरह पराजित किया, परंतु विक्रमादित्य के अभिलेखों में पल्लव राजा परमेश्वरवर्मन की पराजय का उल्लेख प्राप्त होता है।

परमेश्वरवर्मन-I के बाद उसका पुत्र नरसिंह वर्मन-II (680-720 ई०) राजा बना। उसने राजसिंह तथा आगमप्रिय उपाधियाँ धारण की थी।

नरसिंह वर्मन-II के पश्चात् उसका पुत्र परमेश्वर वर्मन-II (720-731 ई०) राजा बना। उसके शासन काल में चालुक्य युवराज विक्रमादित्य ने गंग-राजकुमार एरेयप्प की मदद से कांची पर आक्रमण कर दिया और इस युद्ध में परमेश्वरवर्मन पराजित हुआ। अपनी इस पराजय का बदला लेने हेतु उसने गंग नरेश श्रीपुरुष पर आक्रमण किया। इस युद्ध में वह पुनः पराजित हुआ और मारा गया। परमेश्वर-II की अपनी कोई संतान नहीं थी। इसलिए उसके उपरांत सिंहासन के लिए घोर संघर्ष छिड़ गया। जनसहयोग तथा सेनापति उदयचंद्र के सहयोग से नंदिवर्मन-II शासक बना। उसके काल में चालुक्यों, राष्ट्रकूटों, पाण्ड्य और चोल राजाओं से बराबर युद्ध होता रहा। विक्रमादित्य-II चालुक्य ने इसके शासन काल में कांची पर आक्रमण किया। नंदिवर्मन ने उसे पराजित किया, लेकिन स्वयं वह राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग से पराजित हो गया। संभवतः 757 ई० में राष्ट्रकूटों ने पल्लवों का आधिपत्य समाप्त कर दिया।